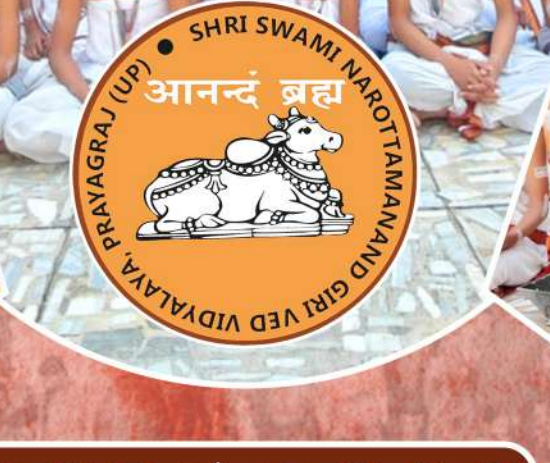
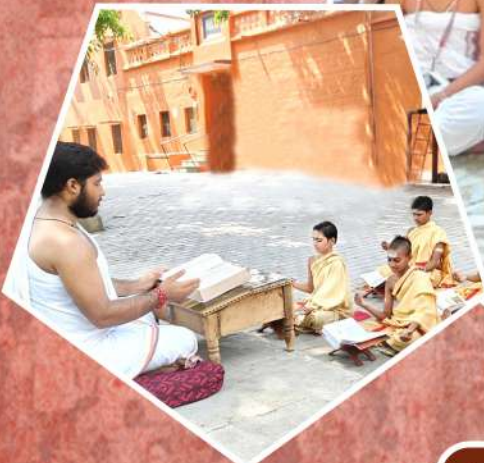


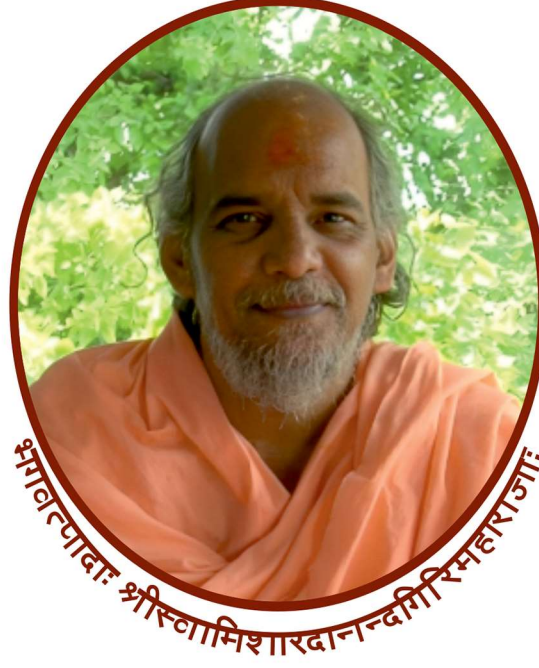
श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय



2025-2026

॥ श्री गङ्गेश्वराय नमः ॥

॥ श्रीशारदेश्वराय नमः ॥



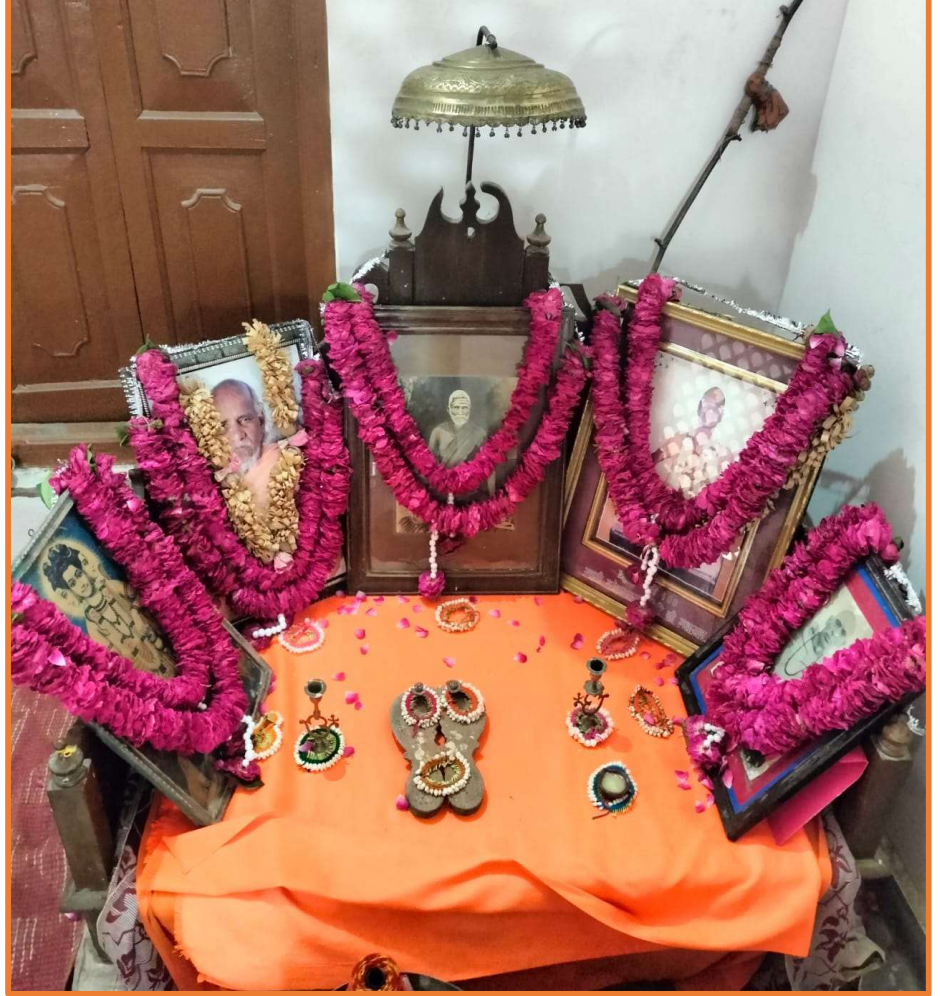
वार्षिक प्रतिवेदन - 2025-26



श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय
श्री परमानन्द आश्रम, झूसी, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) 211019

वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2025–2026

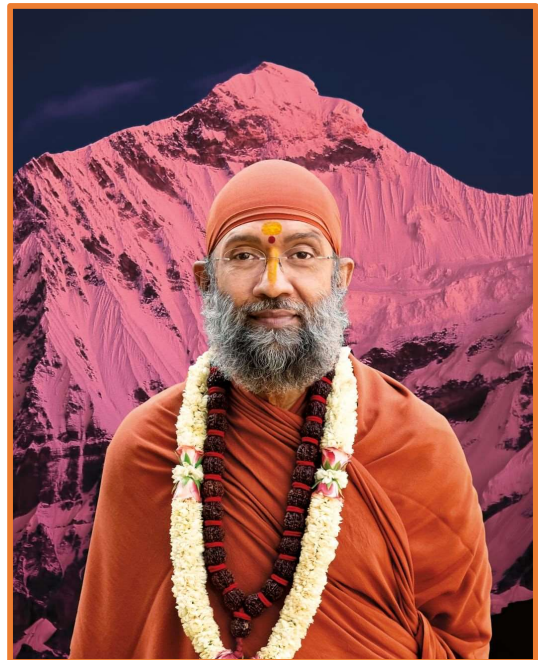
श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय की स्थापना श्री परमानन्द आश्रम ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष परमवीतराग धर्मालंकार यतिसम्राट सांख्ययोगवेदांताचार्य सन्तशिरोमणि परम श्रद्धेय ब्रह्मलीन श्री 108 स्वामी शारदानन्द गिरि जी महाराज द्वारा गुरु पूर्णिमा के अवसर पर दिनांक—07.07.1999 को की गयी थी। विद्यालय को महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.) से दिनांक—01.04.2001 से “वैदिक सस्वर उच्चारण की मौखिक परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने की योजना” के अन्तर्गत इकाई के रूप में मान्यता प्रदान की गयी। प्रतिष्ठान द्वारा वेद के प्रचार—प्रसार एवं इसके संरक्षण, संवर्धन के लक्ष्यों, उद्देश्यों को सफलतापूर्वक हासिल करते हुए विद्यालय द्वारा उत्तरोत्तर प्रगति की गयी। तीन वर्षों के बाद संस्था का



सम्यक् आकलन कर महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.) द्वारा वर्ष 2004–2005 से विद्यालय को पाठशाला योजना में सम्मिलित कर गरिमा प्रदान की गयी। श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय के उद्देश्य निम्नलिखित हैं —

- (क) वेदादि प्राचीन संस्कृत वाङ्मय का अध्यापन।
- (ख) वेद पाठ की मौखिक परम्परा को अक्षुण्ण बनाने के लिये प्रयासरत रहना।
- (ग) बाल्यावस्था से वेदपाठ में पारंगत करना।

- (घ) वेद सभा, सम्मेलन, पारायण, विद्वानों का सम्मान, व्याख्यानमाला तथा प्रतियोगिता का आयोजन करना।
- (ङ) पुस्तकालय, प्रकाशन, वैदिक सनातन धर्म दर्शन का प्रचार—प्रसार।
- (च) वेद—छात्र कल्याणकारी योजनाओं को चलाना, छात्रावास, छात्रवृत्ति उपलब्ध कराना।
- (छ) योग्य छात्रों को धर्मशास्त्र तथा कर्मकाण्ड में प्रशिक्षित करना।
- (ज) संस्कृत तथा अन्य भाषाओं का ज्ञान, आधुनिक विज्ञान तथा गणित के साथ सामाजिक विज्ञान एवं आंग्ल भाषा, वैदिक विज्ञान, वैदिक गणित, वैदिक साहित्य का इतिहास, भारतीय ज्ञान—विज्ञान परम्परा इत्यादि विषयों का ज्ञान कराना।
- (झ) आधुनिक परिवेश को देखते हुये छात्रों को कम्प्यूटर तथा अन्य ट्रेनिंग दिलाने की सुचारु रूप से व्यवस्था की गयी।
- (ञ) सम्मानजनक जीविकोपार्जन तथा नियुक्तियों में परामर्श की सुविधा प्रदान करना।
- (ट) वैदिक सनातन जीवनदृष्टि के अनुकूल समाज तथा बाह्यान्तरिक प्रकृति का विकास विश्वकल्याण के कार्य हेतु भिन्न—भिन्न प्रकार के क्रियाकलाप क्रियान्वित करना।



उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु दशनाम परंपरा के उच्च कोटि विद्वान संत व परमानंद आश्रम के परम पूज्य अध्यक्ष स्वामी विद्याधीशानंद गिरि जी महाराज के निर्देशन में वेद छात्रों के लिए मूल मूल्य—आधारित वैदिक शिक्षा के संरक्षण, संवर्धन का कार्य अनवरत जारी है। उन्होंने हमेशा छात्र स्मृति को बेहतर बनाने और स्वदेशी ज्ञान को संरक्षित करने के लिए निरंतर पारंपरिक वैदिक पाठशालाओं को बढ़ावा दिया और जरूरी सुविधाएं प्रदान की। श्री स्वामी विद्याधीशानंद गिरि जी महाराज ने अनेक प्रतिष्ठित संस्थानों में आमंत्रण पर दुनिया भर में 300 से अधिक औपचारिक व्याख्यान दिए, आध्यात्मिक परंपराओं को जोड़ा और वैदिक ज्ञान की सार्वभौमिक शिक्षाओं को साझा किया।

श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.) के सहयोग से लगातार प्रगति की ओर अग्रसर है। यहां विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि प्रतिष्ठान के माननीय

सचिव श्री विरुपाक्ष वी. जड्डीपाल जी द्वारा इस वेद विद्यालय को पूर्णता प्रदान करते हुए वर्ष 2024 में ऋग्वेद (शाकल शाखा) के संचालन की स्वीकृति प्रदान की गयी। इसी क्रम में वर्षपर्यन्त निम्नलिखित कार्यक्रम/गतिविधियां संचालित की गयी।

1- २० दिवसीय संस्कृत प्रशिक्षण शिविर (दिनांक ०५ अप्रैल २०२५) : उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम्, लखनऊ



(उ.प्र.) द्वारा गृहे-गृहे संस्कृत योजना के तहत श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय में छात्रों के लिये संस्कृत में बोल-चाल हेतु आनलाईन माध्यम से 20 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। संस्कृत संस्थान द्वारा नियुक्त प्रशिक्षक अमित कुमार तिवारी जी ने वेद विद्यालय के छात्रों को सरल भाषा में संस्कृत शिक्षण

आदि को बोल-चाल की भाषा में प्रयोग करने का अभ्यास कराया।

2- नवीन सत्र हेतु प्रवेश परीक्षा

(दिनांक ११ अप्रैल, २०२५) : श्री

स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद

विद्यालय परिसर में नवीन सत्र

(2025-26) के लिये चारों वेदों की

विभिन्न शाखाओं में रिक्त हुए

स्थानों के लिए नवीन छात्रों के

चयन हेतु लिखित एवं मौखिक

प्रवेश परीक्षा का आयोजन हुआ।

इस दौरान 111 छात्रों ने प्रवेश

परीक्षा में प्रतिभाग किया। प्रवेश

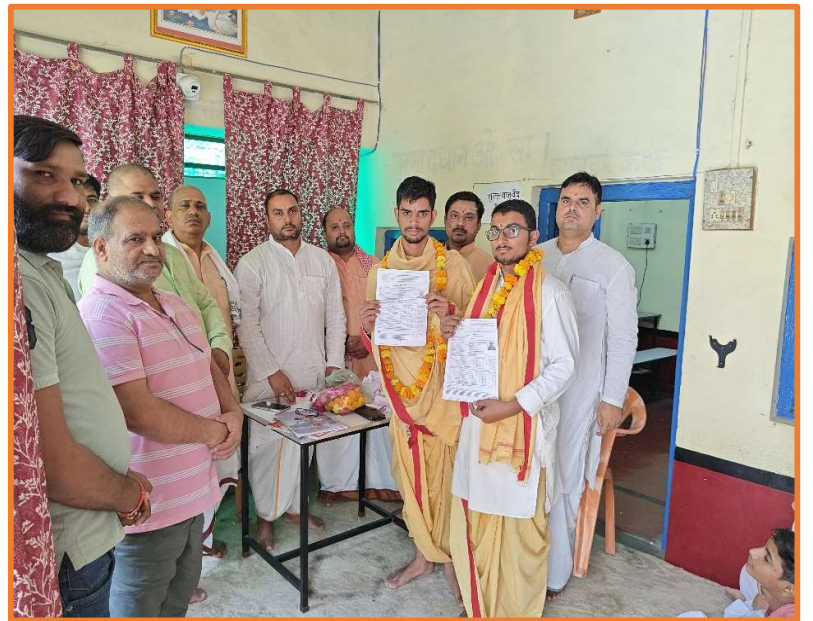
परीक्षा एवं साक्षात्कार के बाद मेरिट के आधार पर नये छात्रों का प्रवेश लिया गया।



11 अप्रैल को ही वेद विद्यालय परिसर में सभी छात्रों के अभिभावकों के साथ शिक्षकों की एक महत्वपूर्ण गोष्ठी (पीटीएम) का आयोजन हुआ। जिसमें विद्यालय के सचिव, प्राचार्य, वेद एवं आधुनिक विषयों के सभी अध्यापक मौजूद रहे। इस दौरान अभिभावकों को छात्रों के अध्ययन की प्रगति से अवगत कराया गया। छात्रों व अभिभावकों को विद्यालय एवं छात्रावास नियमावली के विषय में विस्तृत चर्चा कर बताया गया। विद्यालय नियमावली न मानने वाले कुछ छात्रों के विषय में उनके अभिभावकों को विशेष रूप से अवगत कराते हुए अपने पुत्र/प्रतिपाल्य को समझाने-बुझाने की सलाह दी गयी। अध्ययन तथा व्यवस्था में सुधार हेतु अभिभावकों के सुझाव लिये गये। इस दौरान सभी इस बात से सहमत थे कि विद्यालय में शैक्षिक अनुशासन सर्वोपरि होना चाहिए।



3— ओलंपियाड स्पर्धा (दिनांक 09 मई 2024) : श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय के पूर्व छात्र शोभन उपाध्याय ने केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय की ज्ञान प्रणाली ओलंपियाड स्पर्धा में राज्य स्तर में प्रथम स्थान व राष्ट्रीय स्तर में 5वां स्थान प्राप्त किया। उनकी इस उपलब्धि पर विद्यालय की तरफ से बधाई दी गयी और छात्र शोभन उपाध्याय को विद्यालय की तरफ से सम्मानित किया गया।



4— वार्षिक परीक्षा परिणाम (दिनांक 05 मई 2024) : महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय

वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड उज्जैन (म.प्र.) द्वारा सत्र 2024-25 के लिये परीक्षा परिणाम जारी किया गया। जिसमें

विद्यालय के शुक्ल यजुर्वेद छात्र प्रांजल शुक्ला (प्रथम स्थान), वासुदेव न्यौपाने (द्वितीय स्थान), सामवेद छात्र आदर्श तिवारी को (तृतीय स्थान) प्राप्त हुआ। संस्था द्वारा उत्तीर्ण छात्रों को सम्मानित किया गया व उन्हें आगे और अधिक परिश्रम करने के लिये प्रोत्साहित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गयी।

5- उपनयन संस्कार (दिनांक ०६ मई २०२५) : श्री स्वामी नरोत्तमानंद गिरी वेद विद्यालय लंबे समय से संस्कृ

त और संस्कृति के संरक्षण हेतु कार्यरत है। यहाँ छात्र न केवल पारंपरिक शिक्षा प्राप्त करते हैं बल्कि वे आधुनिक समय में वैदिक ज्ञान की प्रासंगिकता को भी समझते हैं। भारतीय संस्कृति और सनातन



धर्म की प्राचीन परंपराओं को जीवंत रखते हुए श्री स्वामी नरोत्तमानंद गिरी वेद विद्यालय में नवीन प्रवेशित छात्रों का उपनयन संस्कार (यज्ञोपवीत) छात्रों के परिवारजनों की मौजूदगी में पूरे वैदिक विधि-विधान और



अत्यंत हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस पुनीत अवसर पर विद्यालय परिसर वेदमंत्रों से गुंजायमान रहा। उपनयन संस्कार केवल एक अनुष्ठान नहीं बल्कि बालक के आध्यात्मिक जन्म और ज्ञान के मार्ग पर चलने का संकल्प है। प्रातः काल से ही आचार्यों के मार्गदर्शन में गणेश पूजन, पुण्याहवाचन और मातृका पूजन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। नवीन बटुकों ने पूरी श्रद्धा के साथ मुंडन संस्कार और पवित्र स्नान के उपरांत यज्ञोपवीत धारण किया। पूज्य गुरुजनों ने छात्रों को गायत्री मंत्र की दीक्षा दी और उन्हें ब्रह्मचर्य के पालन, स्वाध्याय और संध्यावंदन के महत्त्व को समझाया। उपनयन संस्कार के महत्त्वपूर्ण अंग के

रूप में नव-दीक्षित बटुकों ने प्रतीकात्मक रूप से भिक्षाटन किया जो विनम्रता और अहंकार के त्याग का

प्रतीक है। इस अवसर पर स्थानीय गणमान्य व्यक्ति, छात्रों के अभिभावक और अनेक संस्कृत प्रेमी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में सभी नव-दीक्षित छात्रों को आशीर्वचन प्रदान कर सामूहिक भोज का आयोजन हुआ।

6- विश्व पर्यावरण दिवस (०५ जून २०२५) : श्री स्वामी नरोत्तमानंद गिरी वेद विद्यालय के बटुकों द्वारा



पर्यावरण संरक्षण का अनुपम संदेश दिया गया। वेदों में प्रकृति को देवता माना गया है और इसी परंपरा का निर्वहन करते हुए विद्यालय परिसर में पौधारोपण और बागवानी कार्य छात्रों द्वारा अपनी-अपनी टीम बनाकर संपन्न किया गया। विद्यालय के छात्रों ने न केवल पौधे लगाए बल्कि शास्त्रोक्त विधि से प्रकृति के महत्व को भी रेखांकित किया। उनके इस कार्य में “वृक्षो रक्षति रक्षितः” (जो वृक्षों की रक्षा करते हैं, वृक्ष उनकी रक्षा करते हैं) का भाव स्पष्ट रूप से दिखाई

दिया। छात्रों द्वारा तुलसी, नीम, गिलोय और अश्वगंधा जैसे औषधीय पौधों का रोपण किया गया। पर्यावरण को हरा-भरा बनाने के लिए केंद्रीय बागवानी संस्थान लखनऊ के सहयोग से आम की कई विशेष प्रजातियों,

जामुन, नींबू, बेल, अमरुद आदि के पौधे लगाए गए जो भविष्य में पक्षियों के लिए आश्रय, भोजन और मनुष्यों के लिए छाया प्रदान करेंगे। छात्रों ने न केवल नए पौधे लगाए बल्कि पुराने पौधों की निराई-गुड़ाई की और विद्यालय परिसर की स्वच्छता का संकल्प लिया। वैदिक मंत्रोच्चार के साथ पृथ्वी सूक्त का पाठ किया



गया जिससे वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार हुआ।

प्रकृति और पुरुष का संबंध अटूट है। वेदों में कहा गया है कि एक वृक्ष दस पुत्रों के समान होता है। आज

के युग में ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याओं का समाधान केवल पौधारोपण और प्रकृति के प्रति संवेदनशील होकर ही संभव है। विद्यालय प्रशासन ने यह सुनिश्चित किया है कि लगाए गए इन पौधों की देखभाल की जिम्मेदारी छात्रों को सौंपी जाएगी। प्रत्येक छात्र अपने द्वारा लगाए गए पौधे को मित्र के रूप में देखेगा और उसकी वृद्धि की निगरानी करेगा। इससे छात्रों में न केवल पर्यावरणीय समझ बढ़ेगी बल्कि उनमें अनुशासन और सेवा भाव का भी विकास होगा।

7- पूरक परीक्षा (दिनांक 99 जून २०२५) : महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड-उज्जैन द्वारा निर्धारित केंद्र श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय में 11 से 13 जून तक पूरक परीक्षा का आयोजन कराया गया। परीक्षा में उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों के वैदिक छात्रों ने मौखिक, लिखित, परीक्षा में भाग लिया। प्रतिष्ठान द्वारा सीएमपी डिग्री कालेज के डॉ. भानु प्रकाश त्रिपाठी जी को परीक्षा केंद्र का पर्यवेक्षक एवं विद्यालय के प्राचार्य ब्रजमोहन पाण्डेय जी को केंद्र व्यवस्थापक नियुक्त किया गया था।



8- पुण्यतिथि (दिनांक 9६ जून २०२५) : आषाढ़ कृष्ण पक्ष पंचमी दिन सोमवार को श्री स्वामी नरोत्तमानन्द



गिरि वेद विद्यालय के संस्थापक संतशिरोमणि ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्री 108 स्वामी शारदानन्द गिरि जी महाराज की चतुर्थ पुण्यतिथि के अवसर पर रुद्राभिषेक, गुरुगद्दी पूजन, समाधि पूजन एवं श्रद्धांजली सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंत में सभी

आश्रमवासियों और उपस्थित भक्तों को भण्डारा (प्रसाद) वितरित किया गया। परमानन्द आश्रम प्रबंधन ने

विद्यालय के सभी अध्यापकों और छात्रों को इस सफल आयोजन के लिए बधाई दी।

9— योग दिवस (दिनांक २१ जून २०२५) : महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड उज्जैन एवं आयुष



मंत्रालय के निर्देश पर 11वें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय, झूसी, प्रयागराज में योग संगम कार्यक्रम का आयोजन हुआ। योग न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए बल्कि मानसिक एकाग्रता और आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण अभ्यास है। वेद विद्यालय के प्रांगण में एक भव्य योग शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक जीवन की भागदौड़ के बीच भारतीय ऋषि-परंपरा के दो महत्वपूर्ण स्तंभों वेद और योग के बीच के गहरे संबंध से परिचित कराना था। इसके तहत योग दिवस पर ब्रह्ममुहूर्त में भगवान् भास्कर की पहली किरण के साथ वेदमंत्रों का सस्वर पाठ हुआ। मंत्रों की ध्वनि और प्रातःकाल की शुद्ध वायु ने वातावरण को अत्यंत पवित्र बना दिया।

विद्यार्थियों ने सूर्य नमस्कार के साथ योगाभ्यास शुरू किया। इसके पश्चात ताड़ासन, वृक्षासन और पद्मासन जैसे महत्वपूर्ण आसनों का अभ्यास किया गया।



इस दौरान विशेष रूप से भ्रामरी और अनुलोम-विलोम प्राणायाम पर जोर दिया गया जो वेदों के कण्ठस्थीकरण,

स्मरणशक्ति में वृद्धि के लिए आवश्यक एकाग्रता को बढ़ाने में सहायक होते हैं। योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं है बल्कि यह चित्त की वृत्तियों का निरोध है। एक वेदपाठी विद्यार्थी के लिए स्वस्थ शरीर और शांत मस्तिष्क अनिवार्य है जो केवल योग के माध्यम से ही संभव है। इस आयोजन से छात्रों में एक नई ऊर्जा का संचार देखा गया। विद्यार्थियों ने अनुभव साझा करते हुए बताया कि योग के नियमित अभ्यास से उन्हें लंबे समय तक बैठकर स्वाध्याय करने में शारीरिक कष्ट कम होता है और मन अधिक स्थिर रहता है। वेद विद्यालय में योग का यह सफल आयोजन यह संदेश देता है कि हमारी प्राचीन विधाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी हजारों वर्ष पूर्व थीं। ज्ञान (वेद) और क्रिया (योग) का यह मेल ही एक पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

छात्रों को सड़क नियमों के बारे में संवेदनशील करने तथा उनमें बेहतर यातायात आदतें डालने के लिए सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय एवं प्रतिष्ठान के निर्देश पर 'सड़क सुरक्षा अभियान' के तहत कार्यक्रम आयोजित कर विद्यार्थियों को जागरूक किया गया।



10— गुरुपूर्णिमा (दिनांक १० जुलाई २०२५) : सनातन संस्कृति में गुरु का स्थान बेहद पवित्र और महत्वपूर्ण माना जाता है। आषाढ़ मास की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा होती है। हमारे धर्म ग्रंथों में गुरु में 'गु' का अर्थ



अन्धकार या अज्ञान और 'रू' का अर्थ प्रकाश (अन्धकार को मिटाने वाला) बताया गया है। अज्ञान को हटा कर प्रकाश (ज्ञान) की ओर ले जाने वाले को गुरु कहा जाता है। गुरु की कृपा से ही ईश्वर का साक्षात्कार होता है। गुरु की कृपा के बिना कुछ भी सम्भव नहीं है। आदिगुरु परमेश्वर शिव दक्षिणामूर्ति रूप में समस्त ऋषि मुनि को शिष्य के रूप में शिवज्ञान प्रदान किया था। उनका स्मरण करते हुए गुरुपूर्णिमा का पावन पर्व मनाया जाता है। गुरु

पूर्णिमा उन सभी आध्यात्मिक और अकादमिक गुरुजनों को समर्पित परम्परा है जिन्होंने कर्म योग आधारित व्यक्तित्व विकास और प्रबुद्ध करने, बहुत कम अथवा बिना किसी मौद्रिक खर्च के अपनी बुद्धिमत्ता को साझा करने के लिए तैयार हों। इसको भारत, नेपाल और भूटान में हिन्दू, जैन और बौद्ध धर्म के अनुयायी उत्सव

के रूप में मनाते हैं। यह पर्व हिन्दू, बौद्ध और जैन अपने आध्यात्मिक शिक्षकों के सम्मान और उन्हें अपनी कृतज्ञता दिखाने के रूप में मनाते हैं। गुरुपूर्णिमा के अवसर पर वेद पाठशाला के सभी छात्रों ने अपने गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की और उनके सम्मान में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

11- वेद विद्या प्रतिष्ठान ३६वां स्थापना दिवस (दिनांक ०६ अगस्त २०२५) : शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा स्थापित स्वायत्त संस्थान महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.) के ३९वें स्थापना दिवस समारोह में श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय के छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। वेद मंत्रों की अन्त्याक्षरी, वेद शलाका और वैदिक प्रश्नोत्तरी जैसी प्रतियोगिताएं न केवल हमारी प्राचीन श्रुति परंपरा को



जीवित रखती हैं बल्कि छात्रों के बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास में भी मील का पत्थर साबित होती हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा और सस्वर वेद पाठ की श्रुति परंपरा को अक्षुण्ण रखने के उद्देश्य से आयोजित इस भव्य समारोह में विद्यालय के ०८ मेधावी छात्रों ने प्रतिभाग करते हुए अपनी प्रतिभा व मेधाशक्ति का प्रदर्शन किया। अत्यंत कठिन मानी जाने वाली वेद मंत्र अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता में छात्रों ने वेदों के मंत्रों का सस्वर पाठ करते हुए अपनी स्मरण शक्ति और उच्चारण शुद्धि का परिचय दिया। इस परीक्षा में छात्रों ने वेद के किसी भी पृष्ठ से पूछे गए अंश का शुद्धता के साथ पाठ किया। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के सामान्य ज्ञान एवं वैदिक साहित्य पर आधारित इस प्रतियोगिता में छात्रों ने अपनी तार्किक क्षमता का प्रदर्शन किया। इस प्रकार के आयोजनों से छात्रों में न केवल अपनी संस्कृति के प्रति गौरव भाव जागृत होता है बल्कि शिक्षा मंत्रालय के इन प्रयासों से हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति को आधुनिक स्वरूप में संरक्षण और संवर्धन मिलता है।

“वेदोऽखिलो धर्ममूलम्” – वेदों का ज्ञान ही समस्त धर्म और ज्ञान का मूल है। इसी विद्यालय के वेद विभूषण (षष्ठ वर्ष) छात्र आदर्श तिवारी (सामवेद, कौथुम शाखा) ने द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया। इस परंपरा को आगे बढ़ाने वाले सभी प्रतिभागी छात्र बधाई के पात्र हैं।

12- श्रावणी उपाकर्म (दिनांक ०६ अगस्त २०२५) : प्रयागराज के पावन तीर्थ झूसी में रक्षाबंधन के पावन पर्व

पर वैदिक परंपराओं का अत्यंत सुंदर निर्वाह देखने को मिला। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के पावन संगम तट पर स्थित स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय और झूसी के अन्य वेद पाठशालाओं के आचार्यों और बटुकों



ने सामूहिक रूप से श्रावणी उपाकर्म और ऋषि पूजन संपन्न किया। यह परंपरा केवल एक अनुष्ठान नहीं,



बल्कि हमारी सनातन शिक्षा पद्धति और संस्कृति के प्रति समर्पण का प्रतीक है। इस दौरान संगम की रेती पर बटुकों ने विधि-विधान से पंचगव्य स्नान किया और शारीरिक व मानसिक शुद्धि के संकल्प के साथ कार्यक्रम में हिस्सा लिया। नूतन यज्ञोपवीत धारण कर पुराने संस्कारों को त्यागने और नवीन ऊर्जा के साथ वेदाध्ययन का संकल्प लिया गया। ऋषि तर्पण एवं पूजन सप्त

ऋषियों का आवाहन कर उन्हें जल अर्पित किया गया। यह ऋषियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का माध्यम है जिन्होंने हमें वेदों का ज्ञान दिया। झूसी की समस्त वेद पाठशालाओं के सम्मिलित होने से पूरा तट वेदमंत्रों

की ध्वनि से गुंजायमान रहा जिससे वातावरण अत्यंत आध्यात्मिक और पवित्र हो गया। इसे उपाकर्म इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह वेदों के अध्ययन की शुरुआत या पुनरावृत्ति का समय होता है। झूसी हमेशा से ही विद्वानों और तपस्वियों की भूमि रही है। इस प्रकार के आयोजन सिद्ध करते हैं कि आधुनिकता के दौर में भी प्रयागराज की वैदिक विरासत जीवंत है।

13— पुण्यतिथि (दिनांक १४ अगस्त २०२५) : भाद्र कृष्ण पक्ष षष्ठी दिन सोमवार को श्री स्वामी नरोत्तमानन्द

गिरि वेद विद्यालय में गुरु परंपरा के संतशिरोमणि परम श्रद्धेय ब्रह्मलीन श्री 108 स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि जी महाराज की पुण्यतिथि के अवसर पर रूद्राभिषेक, गुरुगद्दी पूजन समाधि पूजन के साथ ही श्रद्धांजली सभा का आयोजन किया



गया। वक्ताओं ने अपने विचार रखे और छात्रों को वैदिक संस्कृति को अपने जीवन में आत्मसात करने की प्रेरणा दी। इसके बाद प्रसाद वितरण का कार्यक्रम हुआ।

14— स्वतन्त्रता दिवस (दिनांक १५ अगस्त २०२५) : महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन के

निर्देश पर “हर घर तिरंगा अभियान” आजादी का अमृत महोत्सव के तत्वावधान में मनाया गया। इसी क्रम में देश की आजादी की वर्षगांठ के गौरवशाली अवसर पर श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय, झूसी, प्रयागराज में हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों और समाज में



राष्ट्रप्रेम की भावना को सुदृढ़ करना तथा तिरंगे के प्रति सम्मान का भाव प्रकट करना था। कार्यक्रम के दौरान प्रभात फेरी की शुरुआत प्रातः काल में विद्यार्थियों ने की। वेदमंत्रों के उद्घोष और भारत माता की जय के नारों के साथ छात्रों ने आसपास के क्षेत्रों में भ्रमण कर आम जन-मानस को अपने घरों पर तिरंगा फहराने

के लिए प्रेरित किया। संस्था के उपाध्यक्ष श्री स्वामी शरदपुरी जी महाराज द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इसके पश्चात सभी उपस्थित जनों ने सामूहिक रूप से राष्ट्रगान का गायन किया। छात्रों द्वारा राष्ट्र की सुख-समृद्धि



के लिए वेद पाठ, राष्ट्र सूक्त का सस्वर पाठ, सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। साथ ही देशभक्ति गीतों और लघु भाषणों के माध्यम से देश की आजादी के लिये मर मिटने वाले हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद किया गया। इस अभियान ने विद्यार्थियों के भीतर सांस्कृतिक मूल्यों और राष्ट्रीय चेतना का अद्भुत संगम प्रस्तुत किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य ब्रजमोहन पाण्डेय ने अपने संबोधन में कहा कि जिस प्रकार वेद हमें धर्म का मार्ग दिखाते हैं उसी प्रकार हमारा राष्ट्रध्वज हमें एकता और त्याग की प्रेरणा देता है।

कार्यक्रम का समापन शांति पाठ और मिष्ठान वितरण के साथ हुआ।

15- श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (दिनांक १६ अगस्त २०२५) : भाद्रपद कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि की मध्यरात्रि मथुरा के आततायी राजा कंस के अत्याचारों से छुटकारा दिलाने के लिये भगवान् श्रीकृष्ण ने मथुरा में जन्म लिया था। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन अवसर पर वेद विद्यालय में श्रीकृष्ण भगवान के जन्म की भव्य झांकी सजायी गयी और “श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारी” “गोविन्दाष्टकम्” “गोपी मंगल गीत” तथा भगवत् स्तुति का पाठ किया गया। वैदिक मंत्रोच्चार द्वारा विधिपूर्वक भजन-कीर्तन इत्यादि के साथ भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव मनाया गया। वेदछात्रों को भगवान श्री कृष्ण के संदेशों, शिक्षाओं के बारे में विस्तार से बताया गया। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व श्री परमानन्द आश्रम परिसर में अत्यंत हर्षोल्लास और भक्तिमय वातावरण में मनाया

गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के उपाध्यक्ष स्वामी शरदपुरी जी द्वारा दीप प्रज्वलन और भगवान श्री कृष्ण के पूजन के साथ प्रारंभ हुआ। विद्यालय के बटुकों द्वारा चारों वेदों का सस्वर पाठ किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के तहत भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं पर आधारित झाँकियों का प्रदर्शन किया गया। बाल-कृष्ण की लीलाओं और रासलीला की मनमोहक झांकियों ने सभी का मन मोह लिया। इसके साथ ही राधा-कृष्ण, हनुमान जी, माँ काली जी, माँ गंगा की मनमोहक झांकियों ने वातावरण को भक्तिमय कर दिया। कृष्ण जन्माष्टमी के पावन अवसर पर कार्यक्रम में प्रयागराज महापौर श्री गणेश केसरवानी, झूंसी पार्षद सुमित निषाद ने छात्रों का उत्साहवर्धन किया। विद्यालय के आचार्य ने छात्रों को संबोधित करते हुए भगवान कृष्ण



के कर्मयोग के संदेश को जीवन में उतारने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के अंत में भगवान् के जन्मोत्सव के उपरान्त आरती हुई और सभी उपस्थित भक्तजनों एवं छात्रों को माखन-मिश्री का प्रसाद वितरित किया गया।

16- शोक सभा (दिनांक ०२ सितम्बर, २०२५) : श्री स्वामी नरोत्तमानंद गिरि वेद विद्यालय समिति के वरिष्ठतम संस्थापक सदस्य तथा महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन के पूर्व सचिव, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर के पूर्व कुलपति आचार्य युगल किशोर मिश्र जी के आकस्मिक निधन की सूचना मिलने पर विद्यालय परिसर में शोक सभा का आयोजन किया गया। जिसमें

विद्यालय के सभी विद्यार्थी और आचार्यगण उपस्थित हुए। सभी ने नम आँखों से आचार्य मिश्रजी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। इस दौरान उनके सरल व्यक्तित्व, ज्ञान और शिक्षण शैली को याद करते हुए देश भर में वेद एवं संस्कृत के लिये कार्य कर रही संस्थाओं के स्थापन तथा उन्नयन में उनके योगदान पर चर्चा की गयी। उनके निधन से संस्कृत जगत् को जो अपूरणीय क्षति हुई है उसे निकट भविष्य में भर पाना काफी



मुश्किल होगा। शोक सभा में आचार्य जी की आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया।

17- शिक्षक दिवस (दिनांक ०५ सितम्बर २०२५) : वेद विद्यालय जैसे पारंपरिक गुरुकुल संस्थान में शिक्षक

दिवस मनाना आधुनिकता और परंपरा के अभिनव संगम को दर्शाता है। वेद विद्यालयों में गुरु-शिष्य परंपरा का विशेष महत्व है। शिक्षक दिवस के अवसर पर छात्रों ने स्वयं टीम बनाकर भव्य आयोजन किया और कार्यक्रम का प्रारंभ वेद मंत्रोच्चार व गुरु वंदना के साथ किया। वेद छात्रों ने पारंपरिक रीति-रिवाज से अपने आचार्यों का पूजन किया और उनका आशीर्वाद लिया। विद्यार्थियों ने संस्कृत में भाषण, श्लोक अंत्याक्षरी



और गुरु की महिमा पर आधारित नाटिका प्रस्तुत की। विद्यालय के प्राचार्य ब्रजमोहन पाण्डेय ने सभी शिक्षकों की तरफ से विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं बल्कि चरित्र निर्माण करना है। इस अवसर पर मेधावी छात्रों को पुरस्कृत भी किया गया और अंत में शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

18- विकसित भारत (दिनांक १७ सितम्बर २०२५) : भारत सरकार के विकसित भारत 2047 के संकल्प को



साकार करने में हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस विषय पर आयोजित कार्यक्रम न केवल आधुनिक प्रगति बल्कि सांस्कृतिक पुनरुत्थान का भी प्रतीक है। आज जब भारत निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर है ऐसे में विकसित भारत 2047 का लक्ष्य केवल आर्थिक संपन्नता तक सीमित नहीं है। इसमें हमारी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत का समावेश अनिवार्य है। इसी उद्देश्य के साथ श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय में विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान इस बात पर

बल दिया गया कि वेदों का ज्ञान केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें विज्ञान, गणित, खगोल



विज्ञान और आयुर्वेद के ज्ञान का अथाह भंडार है। विद्यार्थियों ने वैदिक गणित और आधुनिक तकनीक के समन्वय पर विचार प्रस्तुत किए। वेद पाठी विद्यार्थियों ने सामूहिक रूप से शपथ ली कि वे 2047 तक भारत

को आत्मनिर्भर और विकसित बनाने में अपना योगदान देंगे। वेद छात्रों का यह संकल्प स्पष्ट करता है कि धोती-कुर्ता धारण करने वाला युवा भी डिजिटल इंडिया और आधुनिक नवाचारों के प्रति उतना ही सजग है। विकसित राष्ट्र के लिए नागरिकों का अनुशासित और नैतिक रूप से सशक्त होना बेहद आवश्यक है। इस दिशा में वेद पाठशालाओं द्वारा युवा पीढ़ी को ब्रह्मचर्य पालन और सदाचार के माध्यम से श्रेष्ठ नागरिक बनाने का प्रयास हो रहा है। विकसित भारत की सस्टेनेबल डेवलपमेंट (सतत विकास) की नीति का आधार हमारे वेदों में पहले से मौजूद है। वैदिक मंत्रोच्चार और योग मानसिक



शांति का मार्ग दिखाते हैं जो एक स्वस्थ और उत्पादक समाज के लिए अनिवार्य है। जब तक हम अपनी प्राचीन विद्या को आधुनिक विज्ञान के साथ नहीं जोड़ेंगे तब तक विकास की परिभाषा अधूरी रहेगी। वेद विद्यालयों में आयोजित ये कार्यक्रम इस बात का प्रमाण हैं कि भारत अपनी पुरातन मेधा (Intelligence) और आधुनिक शक्ति (Technology) के साथ आगे बढ़ रहा है। विकसित भारत का सपना तब पूर्ण होगा जब देश का हर नागरिक अपने गौरवशाली अतीत पर गर्व करते हुए भविष्य की चुनौतियों को स्वीकार करेगा।

19- चतुर्वेद प्रतियोगिता वाराणसी (१२ अक्टूबर २०२५) : धर्म और संस्कृति की राजधानी काशी हमेशा से ही



वेदों के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। वाराणसी स्थित अति प्राचीन श्री दक्षिणामूर्ति मठ में श्री स्वामी महेशानन्द गिरि स्मृति ट्रस्ट द्वारा आयोजित एकादश वेदच्छात्र प्रतियोगिता में अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए देशभर से विद्वान और वेद छात्र एकत्रित हुए। श्री दक्षिणामूर्ति मठ में आयोजित यह चतुर्वेद प्रतियोगिता वेदों के प्राचीन ज्ञान को युवा पीढ़ी तक पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम

है। काशी में वेदों का सस्वर पाठ केवल एक प्रतियोगिता नहीं बल्कि हमारी प्राचीन ऋषियों की थाती को

सहेजने का उत्सव है। श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय के इन बटुकों का उत्साह भारतीय



संस्कृति के उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक है। इन 13 छात्रों की उपस्थिति और उनका अनुशासन परिसर में चर्चा का विषय रहा। सभी छात्रों ने दक्षिणामूर्ति मठ में आयोजित विभिन्न श्रेणियों की वेद स्पर्धाओं में अपनी मेधा का प्रदर्शन किया। इससे पहले, श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय के 13 मेधावी वेद छात्रों का एक दल काशी पहुँचा। प्रतियोगिता में सहभागिता से पूर्व छात्रों ने अपनी यात्रा को आध्यात्मिक ऊर्जा से भरने के लिए काशी हिंदू विश्वविद्यालय परिसर का भ्रमण किया। BHU स्थित भव्य श्री विश्वनाथ मंदिर (नया विश्वनाथ मंदिर) में शीश नवाया और वैदिक मंत्रोच्चार के साथ बाबा का आशीर्वाद

लिया। मंदिर दर्शन के पश्चात छात्रों ने विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गरिमा और परिसर की शांति का अनुभव



किया। सभी छात्रों ने काशी की प्रसिद्ध कचौड़ी-जलेबी का नाश्ता, चाट-गोलगप्पे और विश्वप्रसिद्ध ठंडई का भी आनन्द लिया।

20- भारतीय ज्ञान परंपरा ओलंपियाड प्रतियोगिता (दिनांक १२ अक्टूबर २०२५) : यह अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है कि केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा ऑनलाइन मोड में आयोजित भारतीय ज्ञान परंपरा ओलंपियाड में श्री स्वामी नरोत्तमानंद गिरी वेद विद्यालय के विद्यार्थियों ने अपनी मेधा और ज्ञान का उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए विद्यालय का नाम रोशन किया है।



इस प्रतियोगिता में विद्यालय के छात्र सफल तिवारी, विशाल उपाध्याय, जितेन्द्र पाण्डेय ने राज्य स्तर (State Level) पर तृतीय स्थान प्राप्त कर एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। इसके साथ ही विद्यालय के कुल 7 छात्रों ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए विभिन्न श्रेणियों में स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक के साथ-साथ प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किए हैं। भारतीय संस्कृति, वेदों और प्राचीन ज्ञान की इस परंपरा को आधुनिक मंच पर गौरवन्वित करने के लिए सभी विजयी छात्र बधाई के पात्र हैं। यह सफलता न केवल छात्रों के कठिन परिश्रम को दर्शाती है बल्कि विद्यालय के गुरुजनों के कुशल मार्गदर्शन और श्रेष्ठ शैक्षणिक वातावरण का भी प्रमाण है। विद्यालय परिवार इन सभी छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

21- दीपोत्सव (२० अक्टूबर २०२५) : श्री स्वामी नरोत्तमानंद गिरी वेद विद्यालय में दीपावली का पावन पर्व पारंपरिक और आध्यात्मिक उत्साह के साथ सभी छात्रों अध्यापकों ने मिलकर मनाया। दीपावली उत्सव केवल दीपों का त्योहार नहीं होता बल्कि यह ज्ञान के प्रकाश और वैदिक परंपराओं के संरक्षण का भी प्रतीक है। विद्यालय के प्रांगण में आचार्यों और बटुकों द्वारा शास्त्रोक्त विधि से माता लक्ष्मी का पूजन किया गया जो सुख-समृद्धि और सदबुद्धि की अधिष्ठात्री



हैं। यह छात्रों के लिए क्रियात्मक रूप से कर्मकांड सीखने का एक श्रेष्ठ अवसर भी होता है। अध्यापकों और



छात्रों का एक साथ मिलकर पूजन करना गुरु-शिष्य परंपरा की सुंदरता को दर्शाता है। ऐसे आयोजनों के माध्यम से छात्रों में अपनी संस्कृति और जड़ों के प्रति गर्व का भाव जाग्रत करने का प्रयास किया गया। सामूहिक उत्सव से विद्यालय परिवार में आपसी प्रेम और सद्भाव बढ़ता है। विद्यालय की तरफ से सभी छात्रों को दीपावली पर्व की शुभकामनाएं देते हुए मिठाई खिलाई गयी। अध्यापकों को संस्था के अध्यक्ष श्री स्वामी विद्याधीशानन्द गिरि जी महाराज ने उपहार आदि देकर सम्मानित किया।

22- तुलसी विवाह (०२ नवम्बर २०२५) : वेद विद्यालय के प्रांगण में बटुकों द्वारा तुलसी विवाह

का आयोजन किया गया। तुलसी विवाह न केवल एक धार्मिक अनुष्ठान है बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक विरासत को जीवंत रखने का एक अनूठा प्रयास भी है। सात वार नौ त्योहार वाले भारत में कार्तिक मास त्योहारों का महीना भी कहा जाता है। देवोत्थान एकादशी के पावन अवसर पर वेद विद्यालय में छात्रों द्वारा पारंपरिक तुलसी विवाह का भव्य आयोजन किया गया। वेदमंत्रों की गूँज और शंखध्वनि के बीच आयोजित

इस कार्यक्रम ने संपूर्ण परिसर को आध्यात्मिक रंग में सराबोर कर दिया। इस आयोजन की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि विवाह की समस्त रस्में विद्यालय के छात्रों द्वारा ही संपन्न कराई गईं। वरिष्ठ छात्रों ने आचार्य की



भूमिका निभाते हुए पूर्ण विधि-विधान और शुद्धोच्चारण के साथ मंत्रपाठ किया। भगवान शालिग्राम के स्वरूप को सुंदर पालकी में सजाकर छात्रों ने भव्य बारात निकाली। ढोल-मजीरों की थाप पर बटुकों के नृत्य ने सभी का मन मोह लिया। तुलसी के पौधे (वृंदा) और भगवान विष्णु (शालिग्राम) के विवाह की रस्मों में छात्रों ने मंगलपाठ और अष्टक का गायन किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य ने बताया कि इस प्रकार के आयोजनों

का उद्देश्य छात्रों को केवल किताबी ज्ञान देना नहीं बल्कि उन्हें प्रायोगिक कर्मकांड में निपुण बनाना है। जब छात्र स्वयं मंडप सजाते हैं, वेदी निर्माण करते हैं और संकल्प से लेकर विसर्जन तक की प्रक्रिया खुद करते हैं तो उनका आत्मविश्वास एवं शास्त्रों के प्रति समझ और गहरी होती है। कार्यक्रम के अंत में महाआरती की गई और उपस्थित भक्तों एवं छात्रों के बीच प्रसाद वितरण हुआ। इस आयोजन ने यह सिद्ध कर दिया कि आधुनिक युग में भी हमारे वेद विद्यालयों के छात्र प्राचीन परंपराओं को पूर्ण निष्ठा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।

स्थानीय झूसी थानांतर्गत चौकी इंचार्ज श्री हरिशंकर मिश्रा जी ने वेद पाठशाला के सभी छात्रों से बातचीत



कर उनके खानपान, पठन-पाठन आदि की जानकारी ली और प्रसन्नता व्यक्त की। इस दौरान उत्तर प्रदेश पुलिस की कार्यप्रणाली, आपातकालीन नम्बर 112, 108 के बारे में बताया।

23- अर्द्धवार्षिक परीक्षा (०३ नवम्बर २०२५ से १८ नवम्बर २०२५ तक) : शैक्षणिक सत्र

2025-26 के अर्द्धवार्षिक परीक्षा के आयोजन हेतु वेद विद्या प्रतिष्ठान से जारी दिशा-निर्देश प्राप्त हुए। श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय में सीसीटीवी निगरानी में वेद एवं आधुनिक विषयों की लिखित परीक्षाओं का आयोजन हुआ। जिसमें वेद की परीक्षाओं का संचालन ऑनलाईन मोड में वेद विद्या प्रतिष्ठान द्वारा नियुक्त वेदाध्यापकों के गठित पैनल द्वारा संपन्न कराया गया। विद्यालय के वेद भूषण (प्रथम वर्ष से पंचम वर्ष) और वेद विभूषण (षष्ठ वर्ष से सप्तम् वर्ष) के छात्रों ने भाग लिया।

24- ड्रोन टेक्नोलॉजी कार्यशाला (दिनांक ०७ जनवरी २०२६) : देश भर में अंतरिक्ष विज्ञान में रुचि बढ़ाने एवं शिक्षा में नवाचार को बढ़ावा देने के लिये भारतीय 'अंतरिक्ष सप्ताह' द्वारा बेहद सराहनीय पहल के तहत वेद पाठशाला में छात्रों को अंतरिक्ष विज्ञान, ड्रोन की आधुनिक तकनीक से परिचित कराने के लिये एक वृहद कार्यशाला का आयोजन कर सभी वैदिक छात्रों का उत्साहवर्धन किया गया और उन्हें अंतरिक्ष के रहस्यों से भी परिचित कराया गया। इस कार्यशाला का आयोजन दिनांक 07 जनवरी 2026 को श्री स्वामी नरोत्तमानंद

गिरि वेद विद्यालय परिसर में हुआ। कार्यशाला के आयोजन में India Space Week के राज्य समन्वयक श्री प्रभांशु कुमार की मुख्य भूमिका रही।

इंडिया स्पेस वीक द्वारा आयोजित इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य वैदिक छात्रों को अंतरिक्ष विज्ञान और



आधुनिक ड्रोन टेक्नोलॉजी (UAV) से परिचित कराना था। इसका लक्ष्य छात्रों को यह बताना था कि वेदों में मौजूद प्राचीन ज्ञान और आधुनिक विज्ञान किस प्रकार एक-दूसरे के पूरक बन सकते हैं। विशेषज्ञों द्वारा छात्रों को ड्रोन की कार्यप्रणाली, इसके विभिन्न हिस्सों और एयरोडायनामिक्स के मूलभूत सिद्धांतों के बारे में जानकारी दी गई। छात्रों को ड्रोन के रिमोट कंट्रोल, कैमरा सेंसर और जीपीएस मैपिंग की बारीकियों के बारे

में भी बताया गया। कार्यशाला के दौरान इस बात पर विशेष चर्चा हुई कि कैसे ड्रोन तकनीक का उपयोग भविष्य में—तीर्थ क्षेत्र प्रबंधन, बड़े धार्मिक मेलों और उत्सवों की निगरानी आदि में किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, पुरातत्व महत्व के क्षेत्रों, प्राचीन मंदिरों और पांडुलिपियों के हवाई सर्वेक्षण, पर्यावरण संरक्षण, गुरुकुल के आस-पास के वनों और नदियों की सुरक्षा में ड्रोन तकनीक काफी मददगार साबित हो सकती है।

25- चतुर्वेद प्रतियोगिता (१३ जनवरी २०२६) : श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय में वैदिक परम्परा

के संरक्षण व संवर्धन के क्रम में ब्रह्मलीन श्री स्वामी शारदानंद गिरि जी महाराज के समरणोत्सव पर स्थानीय 'चतुर्वेद प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में श्री स्वामी नरोत्तमानंद गिरि वेद विद्यालय, वेद निधि वाराणसी समेत प्रयागराज की स्थानीय वेद पाठशालाओं से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद के अनेक छात्रों ने उत्साहपूर्वक



प्रतिभाग किया। इसमें प्रमुख रूप से श्री राधा कृष्ण वेद विद्यालय, भारतीय चतुर्धाम वेद भवन, आदि गुरु श्री दत्तात्रेय वेद विद्यालय के वेद छात्र शामिल रहे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गीता प्रेस गोरखपुर के मुख्य ट्रस्टी

श्री कृष्ण कुमार खेमका जी ने कनिष्ठ एवं वरिष्ठ वर्ग में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान हासिल करने वाले विजयी छात्रों को पुरस्कार, प्रमाण-पत्र, शील्ड आदि देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर वेद छात्रों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि आप सभी वेद मूर्ति हैं और वैदिक विद्वानों को भारत ही नहीं पूरी दुनिया में प्रतिष्ठा व सम्मान प्राप्त है। सात्वना पुरस्कार प्राप्त करने वाले छात्रों को परमानन्द

आश्रम के प्रबंधक ब्रह्मचारी मोहन जी ने सम्मानित किया। प्रतियोगिता में परीक्षक के रूप में मुख्य रूप से ऋग्वेद – डॉ मणिकांत मिश्रा (वाराणसी), यजुर्वेद – श्री शिवमूरत तिवारी (लखनऊ), सामवेद – श्री कृष्ण प्रसाद घीमरे (लखनऊ) एवं अथर्ववेद – श्री ज्योति स्वरूप तिवारी (वाराणसी) के विद्वानों ने शुद्ध उच्चारण, स्वर संचालन,



कंठस्थीकरण, वेदपाठ की शुद्धता आदि के आधार पर प्रतिभागियों का मूल्यांकन किया। सभी वैदिक विद्वानों को शॉल, पुस्तक व दक्षिणा से सम्मानित किया गया। दोपहर भंडारे के बाद करीब 1 बजे से सायं 6 बजे तक चले इस कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के प्राचार्य एवं आचार्यगणों के निर्देशन में किया गया। प्राचार्य ब्रजमोहन पाण्डेय ने सात्वना पुरस्कार पाने वाले वेद छात्रों को आगे और अधिक मेहनत करने व निरंतर अभ्यास के साथ वेदाध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय के सचिव डॉ. मनोज झुनझुनवाला ने सभी प्रतिभागियों, अतिथियों, आचार्यों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी ऐसी प्रतियोगिताएं आयोजित करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता जताई।

26- बसन्त पंचमी (२३ जनवरी २०२६) : वसंत ऋतु आते ही प्रकृति का कण-कण खिल उठता है। मानव तो क्या पशु-पक्षी तक उल्लास से भर जाते हैं। हर दिन नयी उमंग से सूर्योदय होता है और नयी चेतना प्रदान कर अगले दिन फिर आने का आश्वासन देकर चला जाता है। विद्या, बुद्धि और संगीत की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती के प्राकट्य दिवस बसन्त पंचमी के पावन अवसर पर श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरी वेद विद्यालय में भव्य सरस्वती पूजन



का आयोजन किया गया। पीले वस्त्रों और गेंदे के फूलों से सजे विद्यालय परिसर में चारों ओर आध्यात्मिक उत्साह का वातावरण दिखाई दिया। कार्यक्रम का आरंभ प्रातः काल माँ सरस्वती की प्रतिमा के सम्मुख दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। विद्यालय के आचार्यगणों के मार्गदर्शन में बटुकों (विद्यार्थियों) ने सस्वर वेदमंत्रों का पाठ किया। बसन्त पंचमी के महत्व को रेखांकित करते हुए विद्यालय के प्राचार्य महोदय ने बताया कि यह पर्व नयी ऊर्जा और ज्ञान के प्रकाश का प्रतीक है। प्रकृति के नव-श्रृंगार के साथ ही विद्यार्थियों के लिए यह दिन अपनी साधना को और प्रगाढ़ करने का संकल्प लेने का समय है। जहाँ वेद की ध्वनि और ज्ञान की जिज्ञासा होती है वहीं माँ सरस्वती का वास होता है। यह आयोजन हमारे सनातन मूल्यों को भावी पीढ़ी में रोपने का एक विनम्र प्रयास है। समापन शांति पाठ और भव्य आरती के साथ हुआ। सभी उपस्थित श्रद्धालुओं और बटुकों ने माँ सरस्वती से विवेक और सन्मति का वरदान माँगा।

27- गणतन्त्र दिवस (२६ जनवरी २०२६) : श्री स्वामी नरोत्तमानंद गिरि वेद विद्यालय, झूंसी (प्रयागराज) में 77वें गणतंत्र दिवस का आयोजन अत्यंत हर्षोल्लास और देशभक्ति के वातावरण में संपन्न हुआ। इस पावन अवसर पर विद्यालय परिवार ने राष्ट्र के गौरव और संवैधानिक मूल्यों के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की। विद्यालय



के मुख्य अतिथि मोहन ब्रह्मचारी जी (प्रबन्धक, श्री परमानन्द आश्रम) द्वारा ध्वजारोहण किया गया। तिरंगा फहराते ही संपूर्ण परिसर भारत माता की जय और वन्दे मातरम् के जयघोष से गूँज उठा। इसके पश्चात सामूहिक रूप से राष्ट्रगान का गायन किया गया। कार्यक्रम की विशेषता यहाँ की परंपरा

रही। बटुकों द्वारा सस्वर वेदमंत्रों का पाठ और मंगलाचरण किया गया। मंत्रों की ध्वनि ने वातावरण में एक आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार किया जो राष्ट्र की प्रगति और शांति के लिए प्रार्थना के रूप में प्रस्तुत की गई। विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। बटुकों ने संस्कृत और हिंदी में देशभक्ति गीतों की मनमोहक प्रस्तुति दी। कुछ छात्रों ने भारत के संविधान, डॉ. बी.आर. अंबेडकर के योगदान और सनातन धर्म व राष्ट्रवाद के अंतर्संबंधों पर ओजस्वी भाषण दिए।

मोहन ब्रह्मचारी जी (प्रबन्धक, श्री परमानन्द आश्रम) ने अपने संबोधन में विद्यार्थियों को बताया कि स्वराज्य के साथ-साथ सुराज्य का होना आवश्यक है। उन्होंने जोर दिया कि वेदों का ज्ञान और आधुनिक राष्ट्र के प्रति कर्तव्य, दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। उन्होंने छात्रों को अनुशासन और राष्ट्र सेवा की शपथ दिलाई। कार्यक्रम के अंत में मेधावी छात्रों को पुरस्कृत किया गया। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का औपचारिक समापन हुआ और सभी उपस्थित जनों के बीच मिष्ठान (प्रसाद) वितरण किया गया। जहाँ वेदों की ऋचाएं गूंजती हैं, वहीं राष्ट्र की जड़ें मजबूत होती हैं। गणतंत्र दिवस का यह उत्सव केवल एक सरकारी पर्व नहीं बल्कि हमारी लोकतांत्रिक गरिमा का उत्सव है।



28— परीक्षा पे चर्चा (०६ फरवरी २०२६) : परीक्षा पे

चर्चा (Pariksha Pe Charcha) भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की एक सराहनीय पहल है जिसे श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय जैसे आध्यात्मिक और शैक्षणिक केंद्रों में भी बड़े उत्साह के साथ



आयोजित किया गया। शिक्षा और आध्यात्मिकता के संगम स्थल श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय में हाल ही में परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम न केवल विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन को सुधारने के लिए था बल्कि उनके मानसिक स्वास्थ्य और जीवन के प्रति दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाने का एक अनूठा प्रयास रहा। वेद विद्यालय के छात्रों के लिए यह कार्यक्रम विशेष महत्व रखता है। यहाँ के छात्र पारंपरिक वेदों के साथ-साथ आधुनिक विषयों का भी अध्ययन करते हैं। इस कार्यक्रम का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों के मन से परीक्षा के भय को समाप्त करना और उन्हें यह समझाना था कि परीक्षा जीवन का अंत नहीं बल्कि एक उत्सव है। कार्यक्रम के दौरान छात्रों ने

प्रधानमंत्री जी के संबोधन को सुना और उनके विचारों पर मंथन किया। वेदों के अध्ययन में अनुशासन की आवश्यकता होती है। चर्चा में बताया गया कि योग और ध्यान के माध्यम से परीक्षा के तनाव को कैसे कम



किया जा सकता है। छात्रों को प्रेरित किया गया कि वे दूसरों से तुलना करने के बजाय अपनी पिछली उपलब्धियों से बेहतर करने का प्रयास करें। डिजिटल युग में तकनीक का, गैजेट्स का संतुलित उपयोग पढ़ाई के लिए कैसे करें और भटकाव से कैसे बचें इस पर भी प्रकाश डाला गया। विद्यालय के प्राचार्य और प्रबंधन ने इस बात पर जोर दिया कि वेद विद्यालय का वातावरण सात्विक और

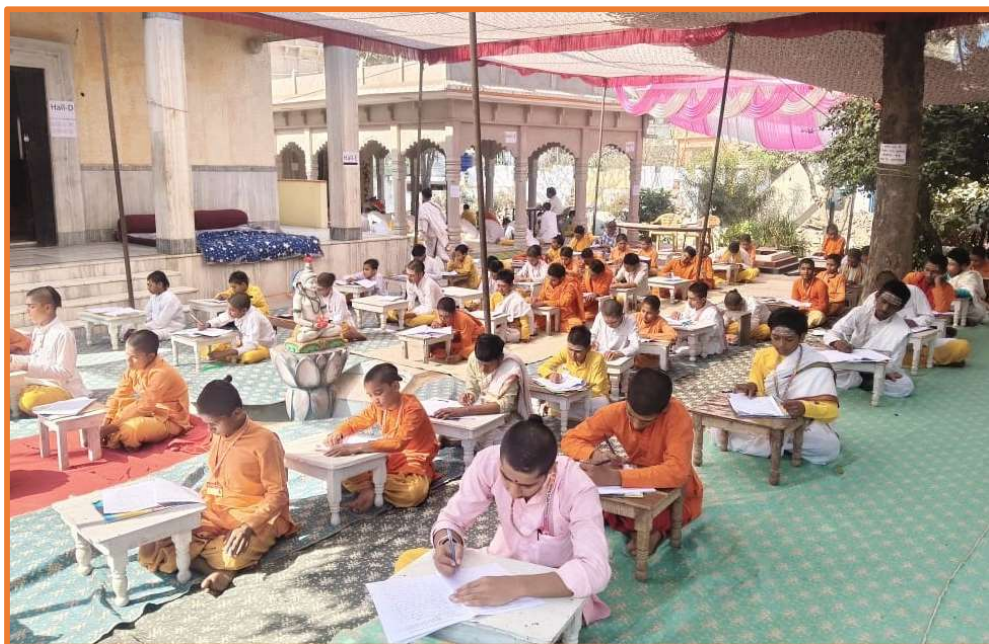
अनुशासित रहे जो छात्रों को एकाग्रता प्रदान कर सके। परीक्षा पे चर्चा जैसे कार्यक्रमों से छात्रों को यह आभास होता है कि राष्ट्र का नेतृत्व भी उनके भविष्य के प्रति गंभीर है जिससे उनमें आत्मविश्वास का संचार होता है। श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम ने विद्यार्थियों को एक नई ऊर्जा प्रदान की। छात्रों ने संकल्प लिया कि वे परीक्षा को बोझ नहीं मानेंगे बल्कि पूरी तैयारी और खुशी के साथ इसमें शामिल होंगे। इस प्रकार के कार्यक्रम आधुनिक और पारंपरिक शिक्षा पद्धति के बीच एक सेतु का कार्य करते हैं।

29— वार्षिक परीक्षा (२३ फरवरी २०२६ से २७ फरवरी २०२६ तक) : महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या

प्रतिष्ठान, उज्जैन द्वारा श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय, झूंसी (प्रयागराज) को वार्षिक परीक्षा केंद्र क्रमांक संख्या 80 के रूप में बनाया गया। वैदिक शिक्षा के संरक्षण और संवर्धन में इस प्रकार के आयोजनों का बहुत महत्व है। इस वार्षिक परीक्षा में वेद भूषण (प्रथम वर्ष से पंचम वर्ष) और वेद विभूषण (षष्ठ वर्ष) के कुल 321 वैदिक बटुकों ने उत्साहपूर्वक भाग



लिया। इसमें वेदों की पारंपरिक मौखिक परीक्षा के साथ-साथ आधुनिक विषयों की लिखित परीक्षा का भी समन्वय देखा गया। जहाँ एक ओर छात्र वेदमंत्रों का सस्वर पाठ (मौखिक) कर रहे हैं वहीं दूसरी ओर आधुनिक विषयों की लिखित परीक्षा उनके सर्वांगीण विकास को दर्शाती है। उज्जैन (म. प्र.) स्थित यह संस्थान पूरे भारत में वेद विद्या के मानकीकरण और प्रचार-प्रसार के लिए सर्वोच्च निकाय के रूप में कार्य करता है।



प्रयागराज का झूंसी क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से आध्यात्मिक और शैक्षिक केंद्र रहा है। इस विद्यालय का चयन इसकी गुणवत्ता और अनुशासन को प्रमाणित करता है। 321 वैदिक बटुकों की उपस्थिति यह दर्शाती है कि नई पीढ़ी में अपनी प्राचीन संस्कृति और ज्ञान परंपरा के प्रति गहरा आकर्षण और समर्पण है। यह हमारी ज्ञान परंपरा को जीवित रखने की दिशा में एक सशक्त कदम है। वार्षिक परीक्षा में केन्द्र क्रमांक 80 पर केंद्र



पर्यवेक्षक डॉ. आशीष कुमार त्रिपाठी (सहायक प्रोफेसर संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय), सह-केंद्र पर्यवेक्षक डॉ. विकास शर्मा (सहायक प्रोफेसर संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय), केन्द्राध्यक्ष ब्रजमोहन पाण्डेय प्राचार्य (सामवेदाचार्य श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय, झूंसी, प्रयागराज), सह-केन्द्राध्यक्ष डॉ. मनोज झुनझुनवाला (सचिव, श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय, झूंसी, प्रयागराज) मौजूद रहे। विद्यालय के अध्यापकों ने कक्ष निरीक्षण समेत अन्य महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का निर्वहन किया। वार्षिक परीक्षा में शामिल हो रहे सभी छात्रों को विद्यालय की तरफ से ब्रश मंजन साबुन तेल कपड़े धोने का पाउडर आदि दैनिक उपयोग सामग्री की किट प्रदान की गई।

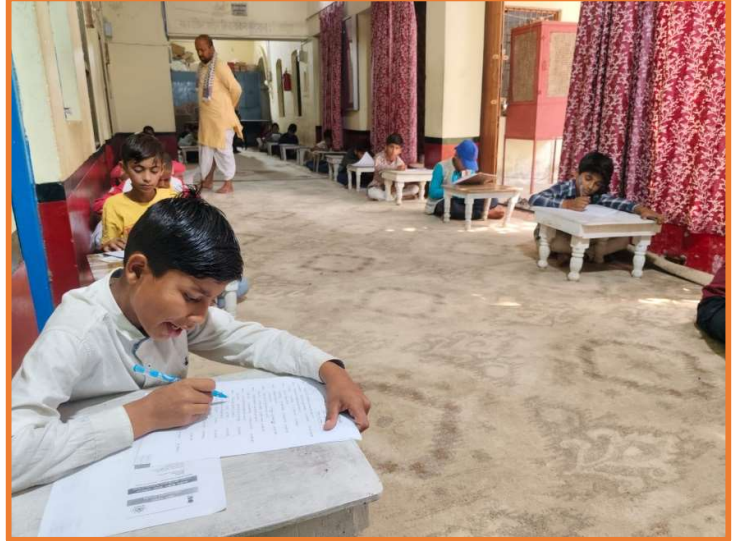
30— होली उत्सव (०२ मार्च २०२६) : होली का उत्सव केवल एक त्यौहार नहीं बल्कि परंपरा और उल्लास का एक सुंदर संगम होता है। श्री स्वामी नरोत्तमानंद गिरी वेद विद्यालय में इस वर्ष होली का पावन पर्व अत्यंत हर्षोल्लास और सात्विक वातावरण में मनाया गया। विद्यालय के प्रांगण में भक्ति और आनंद का एक अनूठा



दृश्य देखने को मिला जहां छात्रों ने एक दूसरे को रंग लगाया और अपने गुरुजनों से स्नेह प्राप्त किया। होली उत्सव की शुरुआत वैदिक मंत्रोच्चार और ईश्वर की स्तुति के साथ हुई। छात्रों ने होलिका दहन के पौराणिक महत्व और बुराई पर अच्छाई की जीत के संदेश को साझा किया। यह दिन अनुशासन की सीमाओं से परे आत्मीयता का था। अध्यापकों ने छात्रों के साथ मिलकर गुलाल खेला और उन्हें आशीर्वाद दिया। कुछ छात्रों ने होली के पारंपरिक गीत (होली मंगल) गाए, जिससे पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। विद्यालय की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए केवल गुलाल और प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया गया जो स्वास्थ्य और पर्यावरण के अनुकूल थे। हर्बल गुलाल वाराणसी के सुप्रसिद्ध उद्योगपति व वेद एवं वेद छात्रों से लगाव रखने वाले झोलिया परिवार द्वारा भेजे गये। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य छात्रों के भीतर आपसी भाईचारे और एक-दूसरे के प्रति सम्मान का भाव प्रदर्शित करना था। होली के इन रंगों ने यह सिखाया कि जिस तरह अलग-अलग रंग मिलकर एक सुंदर चित्र बनाते हैं, उसी तरह विविध पृष्ठभूमि से आए छात्र भी एक परिवार

की तरह इस विद्यालय की शोभा बढ़ाते हैं। रंग-गुलाल लगाने के बाद सभी ने मिलजुल कर मिष्ठान वितरण किया और मंगलकामनाओं के साथ मिलकर रंगारंग उत्सव मनाया।

31- नवीन सत्र प्रवेश परीक्षा (दिनांक १५ मार्च २०२६) : श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय में शैक्षणिक सत्र के लिए नवीन प्रवेश की प्रक्रिया सामान्यतः वसंत ऋतु या शैक्षणिक सत्र के प्रारंभ में शुरू होती है। यह विद्यालय पारंपरिक वैदिक शिक्षा और आधुनिक विषयों के समन्वय के लिए जाना जाता है। श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय परिसर में नवीन सत्र (2026-27) के लिये चारों वेदों के विभिन्न शाखाओं में रिक्त स्थानों के लिए नवीन छात्रों के चयन हेतु लिखित एवं मौखिक प्रवेश परीक्षा का आयोजन हुआ। इस दौरान 67 छात्रों ने प्रवेश परीक्षा में प्रतिभाग किया। प्रवेश परीक्षा में कुल 10 छात्रों का अनंतिम रूप से चयन किया गया। जिन्हें आगे डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन व अन्य कागजी औपचारिकताओं को पूरा करने के बाद प्रवेश दिया जायेगा।



32- ग्रीष्मकालीन व शीतकालीन वस्त्र वितरण - श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय की परंपरा और



छात्र कल्याण के प्रति इसकी प्रतिबद्धता सराहनीय है। किसी भी शिक्षण संस्थान विशेषकर वेद विद्यालय जहाँ प्राचीन भारतीय संस्कृति और अनुशासन का पालन किया जाता है वहां छात्रों की मूलभूत आवश्यकताओं का ध्यान रखना उनकी विद्या प्राप्ति की यात्रा को सुगम बनाता है। वेद विद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र न केवल वेदों का अध्ययन

करते हैं बल्कि वे एक कठोर अनुशासित जीवन भी जीते हैं। उनकी इस तपस्या में मौसम की प्रतिकूलता

बाधा न बने इसके लिए विद्यालय प्रबंधन सदैव तत्पर रहता है।

भारतीय संस्कृति में विद्या-दान को महादान माना गया है, लेकिन इस दान की सार्थकता तभी पूर्ण होती है जब यह सुपात्र को मिले। विद्या ग्रहण करने वाले बटुक सर्वोत्तम पात्र माने जाते हैं अतः उनकी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखने के उद्देश्य से तथा प्रतिष्ठान के निर्देश के अनुपालन में श्री स्वामी नरोत्तमानंद गिरी वेद विद्यालय द्वारा वर्ष में दो बार के अतिरिक्त समय-समय पर छात्रों को दैनिक उपयोग की आवश्यक सामग्री जैसे साबुन, तेल, मंजन, कपड़ा धोने का पाउडर, ब्रश आदि समेत वस्त्र वितरण किया जाता है। सामूहिक वस्त्र वितरण से सभी छात्रों में एकरूपता रहती है और उनमें आपसी सौहार्द बढ़ता है। पारंपरिक वेशभूषा को बढ़ावा देकर यह विद्यालय नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़े रखने का महान कार्य कर रहा है।

33- कौशल विकास एवं उद्यमिता – महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा कौशल विकास एवं उद्यमिता (PMKVY) 2.5 एवं 3.0 परियोजनाओं के अंतर्गत चतुर्थ से सप्तम वर्ष के छात्रों के लिए आयोजित व्यवहारिक प्रशिक्षण एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस वेद पाठशाला में पौरोहित्य प्रशिक्षण तथा वेद शास्त्र प्रवचन का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। पौरोहित्य प्रशिक्षण के अन्तर्गत छात्रों को कर्मकांड, पूजन-पद्धति और अनुष्ठानों का व्यावहारिक ज्ञान दिया गया जो समाज में आध्यात्मिक और धार्मिक सेवाओं के लिए आवश्यक है। वेद शास्त्र प्रवचन के अन्तर्गत वेदों में मौजूद अथाह ज्ञान को सरल और प्रभावी ढंग से जनमानस तक पहुँचाने की कला (Public Speaking & Discourse) सिखाई गई।



प्रशिक्षित और प्रमाणित पुरोहितों एवं प्रवचनकारों की मांग वर्तमान में देश-विदेश में बढ़ रही है। छात्रों में व्यवहारिक कौशल एवं दक्षता सुनिश्चित करने के लिए प्रशिक्षण को तीन मुख्य भागों में विभाजित किया गया

है। सर्वप्रथम शास्त्रों के सैद्धांतिक ज्ञान और नियमों को सिखाया गया। मंत्रोच्चार की शुद्धता, याद करने की शक्ति और शास्त्रार्थ की क्षमता विकसित की गयी। कौशल विकास योजना के अन्तर्गत छात्रों ने अलग-अलग तरह से प्रोजेक्ट कार्य भी किया। इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को केवल पारंपरिक ज्ञान तक सीमित न रखकर उन्हें उद्यमिता (Entrepreneurship) से जोड़ना है। परियोजना में शामिल छात्रों को भारत सरकार के कौशल विकास मंत्रालय द्वारा प्रमाणन (Certification) मिलता है जो रोजगार में सहायक होता है। वेदों के प्राचीन ज्ञान को आधुनिक प्रबंधन और उद्यमिता के साथ जोड़कर करियर के नए अवसर प्राप्त होंगे। सरकार और मंत्रालय की यह पहल पारंपरिक वैदिक शिक्षा को आत्मनिर्भरता और व्यावसायिक कौशल से जोड़ने की दिशा में एक सराहनीय कदम है।

उपर्युक्त के अलावा श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय में पुरातन व अधुनातन शिक्षा के संगम का अनूठा महाकुंभ पिछले 25 वर्षों से अनवरत चल रहा है। यहाँ वैदिक बटुक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस AI से लेकर वेदों के कठिन मंत्र, पुराण, उपनिषद, गीता की शिक्षा हासिल कर रहे हैं। यह वेद विद्यालय अपने स्तर पर वेद की पढ़ाई करने वाले छात्रों को कंप्यूटर में भी पारंगत बना रहा है। प्रधानमंत्री जी के डिजिटल इंडिया की परिकल्पना को साकार करते हुए वेद विद्यालय में इस वर्ष संस्था के उपाध्यक्ष श्री स्वामी शरद पुरी जी के निर्देश पर कम्प्यूटर कक्ष को और अधिक आधुनिक बनाया गया और नये कम्प्यूटर सेट लगाये गये ताकि



सभी वेद छात्रों को समान रूप से कम्प्यूटर सीखने का मौका मिले। ऑनलाइन कक्षा, व्याख्यान आदि के लिये बड़ा स्क्रीन लगाया गया है। ये हाईटेक व हुनरमंद वैदिक बटुक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से लेकर वेदों के कठिन मंत्र, पुराण, उपनिषद, गीता, अंग्रेजी, गणित की शिक्षा हासिल कर रहे हैं। विद्वानों का भी मानना है कि वेद केवल आध्यात्मिक ही नहीं बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से भी प्रासंगिक है। क्योंकि वेद के बिना एआई का सम्पूर्ण विकास संभव नहीं है। वेदों के संरक्षण, संवर्धन व उन्नयन में कंप्यूटर का ज्ञान अत्यंत जरूरी है।

छात्रों के सर्वाङ्गीण कौशल विकास तथा बौद्धिक क्षमता के संवर्धन के लिये संस्था द्वारा अपने स्तर पर ही वेद छात्रों के लिये कम्प्यूटर शिक्षण और प्रशिक्षण कार्यक्रम वर्ष 2004 से ही चलाया जा रहा है। छात्रों को कम्प्यूटर की बुनियादी जानकारी के साथ ही आर्टिफिशियल इंटेलीजेन्स (एआई) का उपयोग, कम्प्यूटर पर हिन्दी व अंग्रेजी टायपिंग, माइक्रोसॉफ्ट वर्ड, पावर पॉइंट, एक्सेल, पीपीटी, फोटोशॉप आदि का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है। वेदपाठी छात्रों में वेद के साथ-साथ कम्प्यूटर शिक्षा हासिल करने को लेकर काफी उत्साह रहता है। आने वाले समय में इन वेद विद्यालयों से अब सिर्फ पूजा-पाठ कराने वाले वेदपाठी ही नहीं, बल्कि



हार्डटेक और हुनरमंद वैदिक निकलेंगे। जो संस्कृत और वेद के साथ ही कम्प्यूटर पर काम करने में दक्ष होंगे; साथ ही किसी न किसी कौशल (स्किल) में भी पारंगत होंगे। कम्प्यूटर के माध्यम से प्राचीन ग्रंथों, श्लोकों, और मंत्रों को संरक्षित करना, उनका अध्ययन करना और उन्हें वैश्विक स्तर पर साझा करना आसान हो गया है। वेदों के हस्तलिखित और मुद्रित संस्करणों को स्कैन करके डिजिटल स्वरूप में संग्रहीत किया जा सकता है। कम्प्यूटर के जरिए वेदों का विस्तृत और खोज योग्य डेटाबेस तैयार किया जा सकता है। कम्प्यूटर प्रयोग से विलुप्त हो रही पांडुलिपियों और लुप्तप्राय सामग्री को संरक्षित और पुनर्जीवित करने में मदद मिल रही है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेन्स (एआई) का उपयोग करके खोई हुई सामग्री का पुनः निर्माण करने का प्रयास किया जा सकता है।

उपयोगकर्ता मंत्र, ऋचाएं या विषय के आधार पर सामग्री को खोज सकते हैं। वेदों के मंत्रों का उच्चारण सही तरीके से संरक्षित करने के लिए ऑडियो रिकॉर्डिंग और साउंड एनालिसिस किया जा सकता है। ताकि सही स्वर और उच्चारण को भविष्य की पीढ़ियों तक पहुँचाया जा सके। वेदों में निहित ज्ञान का विभिन्न भाषाओं

में अनुवाद और व्याख्या करने के लिए कंप्यूटर पर आधारित सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जा सकता है। वेद



छात्रों को ऑडियो-विजुअल माध्यम से बड़े स्क्रीन पर विभिन्न विषयों, सरकार द्वारा उपलब्ध कराये गये शैक्षिक वीडियो के माध्यम से सौरमंडल आदि से जुड़े शॉर्ट वीडियो दिखा कर जानकारी दी गई।

कड़कड़ाती ठंड और शीतलहर के दौरान छात्रों

को ठंड से बचाने के लिए ऊनी वस्त्रों, कंबल, शॉल और गर्म कपड़ों का वितरण किया गया। यह सुनिश्चित किया जाता है कि ब्रह्ममुहूर्त में उठकर संध्या-वंदन और वेदमंत्रों का पाठ करने वाले इन बटुकों को स्वास्थ्य संबंधी कोई कष्ट न हो। विद्यालय की गरिमा और परंपरा को बनाए रखने के लिए छात्रों को नियमित रूप से धोती और कुर्ते प्रदान किए जाते हैं। यह सात्विक वेशभूषा उनमें अनुशासन और अपनी संस्कृति के प्रति गर्व का भाव जागृत करती है। गर्मी के मौसम के अनुकूल सूती और आरामदायक वस्त्रों की व्यवस्था की जाती है ताकि छात्र एकाग्रता के साथ अपना अध्ययन जारी रख सकें। श्री स्वामी नरोत्तमानंद गिरी वेद विद्यालय का यह प्रयास केवल एक भौतिक वितरण नहीं है बल्कि यह उन भावी कर्णधारों के प्रति सम्मान और स्नेह का प्रतीक है जो हमारी प्राचीन ज्ञान परंपरा को जीवित रखे हुए हैं। समाज के सहयोग और संस्थान के इस सेवा भाव से ही वेद पाठशालाएँ निरंतर पल्लवित हो रही हैं। इसके अतिरिक्त वेद छात्रों की पसंद और मांग के मुताबिक सायंकाल नाश्ते में गोलगप्पे, आइसक्रीम, समोसा, जलेबी आदि को भी शामिल किया जाता है। इससे छात्रों की इच्छापूर्ति भी होती है और वे रुचिपूर्ण ढंग से नाश्ते का स्वाद लेते हैं। रात्रिकालीन स्वाध्याय कक्षा के बाद दूध का वितरण होता है जिससे छात्रों के शारीरिक विकास की गति बनी रहती है।





खबरों में वेदपाठशाला



हिन्दुस्तान

30 जून 2025, अमर उजाला, पृष्ठ 04, हिन्दुस्तान 2082, प्रकाशन

अपना प्रयागराज

मरोसा नए हिन्दुस्तान का

विश्व पर्यावरण दिवस

अदभुत | निरंतर अभ्यास से वेद छात्रों में पैदा होती है अद्भुत स्मरणशक्ति, अभ्यास, अनुशासन, ध्यान और नियमित दिनचर्या ही मूल मंत्र

वेद मंत्रों को अपने मस्तिष्क में सहेज लेते हैं मेमोरी मास्टर्स

प्रयागराज मुख्य संवाददाता। अनुष्ठान विभाग प्रशासकीय विभाग में 'वेद पाठशाला' के छात्रों को वेद मंत्रों के जटिल अर्थों को समझाने के लिए 'मेमोरी मास्टर्स' का कार्यक्रम आयोजित किया गया। छात्रों को वेद मंत्रों को अपने मस्तिष्क में सहेज लेने का तरीका बताया गया।

मेमोरी मास्टर्स का कार्यक्रम छात्रों के बीच बहुत लोकप्रिय रहा। छात्रों को वेद मंत्रों को अपने मस्तिष्क में सहेज लेने का तरीका बताया गया।

Veda students celebrated Holi before going home for vacation

JEEVAN EXPRESS NEWS

PRAYAGRAJ: Veda students of Shri Swami Narottamanand Giri Veda Vidyalaya at Paramananda Ashram in Jhansi celebrated Holi before going home for Holi vacation on Monday, as their exams gets over.

The Veda students first visited Shri Lakshmi Narayan Temple, Gangeshwar Mahadev, Shardeshwar Mahadev, Gulaal was offered to the Lord the festival of colours

न्यूज डायरी अमर उजाला

वेद पाठियों ने रचनात्मक चित्रों के जरिये विकसित भारत को दर्शाया

विद्यालय में आयोजित प्रतियोगिता के प्रतिभागी वेदपाठी। संवाद झूंसी। देशभार में 17 सितंबर से दो अक्टूबर तक चलाए जा रहे सेवा पर्व-2025 के तहत शनिवार को स्वामी नरोत्तमानंद गिरि वेद विद्यालय नई झूंसी में 'विकसित भारत के रंग, कला के संग' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

पहल | इंडियन नॉलेज सिस्टम डिजिटल और केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय ने योजना शुरू की, कम से कम पांच वर्षों तक भारतीय विद्याओं या कलाओं में गहन अध्ययन करना जरूरी

गुरुकुल शिक्षा पद्धति में प्रशिक्षित छात्र अब आईआईटी से शोध करेंगे

■ अतिथि उपाध्यक्ष नई दिल्ली। भारतीय पारंपरिक गुरुकुल शिक्षा पद्धति में प्रशिक्षित छात्र अब आईआईटी से शोध कर पाएंगे। शिक्षा मंत्रालय के अधीनस्थ इंडियन नॉलेज सिस्टम डिजिटल और केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय की ओर से संयुक्त रूप से सेतुबंध स्कीम शुरू की गई है।

पहली बार शुरू की गई यह योजना उन पारंपरिक विद्वानों के लिए है, जिन्होंने कम से कम पांच वर्षों तक किसी गुरु या गुरुकुल में रहकर भारतीय विद्याओं या कलाओं में गहन अध्ययन किया है। ऐसे 18 क्षेत्र चुने गए हैं, जिनमें शोध करने का मौका मिलेगा। जिन छात्रों ने पारंपरिक पद्धति से अध्ययन किया है, लेकिन जिनके पास औपचारिक डिग्री नहीं है, वे अब अपनी विद्वत्ता प्रमाणित करके मान्यता प्राप्त डिग्री के साथ-साथ शोध भी कर पाएंगे।

केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. श्रीनिवास परखेजू ने कहा कि यह योजना पारम्परिक भारतीय विद्या और आधुनिक शिक्षा के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करेगी। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय में छात्रों का नामांकन पानी वा रिसर्च में होगा, लेकिन उनके अध्ययन का स्थल आईआईटी में होगा। आईआईटी हैदराबाद, आईआईटी मंबई और आईआईटी रुड़की से हमारा अनुबंध हुआ है। इसके अलावा अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद का भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) डिजिटल और केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में शोध के लिए भेजा जाए। पहली बार ऐसा प्रयास किया गया है।

आईआईटी मंबई और आईआईटी रुड़की से हमारा अनुबंध हुआ है। इसके अलावा अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद का भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) डिजिटल और केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में शोध के लिए भेजा जाए। पहली बार ऐसा प्रयास किया गया है।

संयुक्त रूप से सेतुबंध स्कीम शुरू की गई है। पहली बार ऐसा प्रयास किया गया है।

संयुक्त रूप से सेतुबंध स्कीम शुरू की गई है। पहली बार ऐसा प्रयास किया गया है।

झूंसी-फाफामऊ amarujala.com

प्रयागराज | बुधवार, 11 जून 2025

भारतीय संस्कृति, भाषा और वेद को समृद्ध कर रहे संस्कृत विद्यालय

झूंसी। गंगापार में नई और पुरानी झूंसी स्थित आश्रमों में भारतीय संस्कृति व संस्कृत भाषा को आजादी के पहले से ही समृद्ध बनाए रखने की श्रद्धा-मनियां ने नींव डाली थी। वह परंपरा आज भी यहां के संस्कृत विद्यालयों में बरकरार है।

संस्कृत विद्यालयों में वातावरण सुबह से संस्कृत के श्लोक और वेद

आजादी के पहले से झूंसी स्थित आश्रमों में संस्कृत भाषा और वेद की दी जा रही शिक्षा

कई ऐसे भी हैं, जो सात समंदर पार जाकर संस्कृत भाषा को समृद्ध बना रहे हैं।

नई झूंसी स्थित प्राचीन श्री संकीर्तन ब्रह्मचर्याश्रम संस्कृत महाविद्यालय के

अमेरिका, यूके और फिनलैंड में यहां के छात्र हैं मंदिर के मुख्य पुजारी

झूंसी। झूंसी के संस्कृत विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों में कई इस वक्त अमेरिका, यूके, कनाडा और फिनलैंड के प्रमुख मंदिरों में मुख्य पुजारी के पद पर आसीन हैं। स्वामी रामनरेशचरण इस वक्त फिनलैंड में मंदिर के मुख्य पुजारी हैं। इसी प्रकार, डॉ. रामस्नेह त्रिपाठी अमेरिका के न्यूयार्क में मंदिर के मुख्य पुजारी हैं। ये सभी विदेश में संस्कृत भाषा और वेद-पुराण का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

हिन्दुस्तान

30 जून 2025, अमर उजाला, पृष्ठ 04, हिन्दुस्तान 2082, प्रकाशन

अपना प्रयागराज

मरोसा नए हिन्दुस्तान का

इंग्लैंड के हालात सामझने उतरेंगे भारतीय टेस्ट क्रिकेटर

बदलाव | पहले कर्मकांड के लिए शुक्ल यजुर्वेद को प्राथमिकता दी जाती थी, अब ऋग्वेद, अथर्ववेद, सामवेद पढ़ने में भी रुचि बढ़ रही, वेद पाठशालाओं में परीक्षा के जरिए लिया जा रहा प्रवेश

केवल शुक्ल यजुर्वेद नहीं, चारों वेदों में छात्रों का बढ़ा आकर्षण

प्रयागराज, मुख्य संवाददाता। वेद पाठशालाओं में केवल शुक्ल यजुर्वेद ही नहीं चारों वेदों के अध्ययन के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। करीब डेढ़ दशक पूर्व उत्तर भारत में वेद अध्ययन के लिए गिने-चुने छात्र ही आगे आते थे और उसमें भी अधिकांशतः केवल शुक्ल यजुर्वेद ही

कमी के कारण एक समय ऐसा भी आया था कि कई वेद एवं शाखाओं को पढ़ाने वाले भी मुश्किल से मिलते थे या कहें यह लुप्तप्राय हो रहा था।

वेदों में छात्रों की अभिरुचि बढ़ने के कारणों को बताते हुए श्री स्वामी नरोत्तमानंद गिरि ने निम्नलिखित कारणों को बताया है।

वर्तमान समय में बेहद कम शाखाएं ही मिलती हैं चारों वेद अनेकों शाखाओं में विभक्त हैं। यजुर्वेद की 101 शाखा, सामवेद की 1000 शाखा, ऋग्वेद की 21 शाखा और अथर्ववेद की 9 शाखा हैं। स्कन्द पुराण के अनुसार एक वेद पहले महर्षि वेदव्यास द्वारा चार भाग में विभक्त किया गया और उसके पश्चात उसी के 1131 विभाग हुए जिनको शाखा कहते हैं। वेदों की इतनी शाखाएं होने के बाद भी वर्तमान समय में कुछ ही या कहें वेद कम शाखाएं ही मिलती हैं।



**Shri Swami Narottamanand
Giri Ved Vidyalyaya
Shri Parmanand Ashram, Jhusi,
Prayagraj 211019 (Uttar Pradesh)**

☎ Phone : 0532-2569205, UDISE+ : 09459100111